NBG-16070201020300 Seat No. _____

B. R. S. (Sem. II) (CBCS) Examination

April/May - 2017

Hindi

(New Course)

Time : $2\frac{1}{2}$ Hours] [Total Marks : **70**

सूचना : सभी प्रश्नों के उत्तर सूचनानुसार दीजिए ।

१ खण्डकाव्य के लक्षणों के आधार पर 'पंचवटी' खण्डकाव्य का मूल्यांकन कीजिए । १५

अथवा

१ 'पंचवटी' खण्डकाव्य की कथावस्तु अपने शब्दों में लिखिए । १५

२ निम्नांकित प्रश्नों के उत्तर सूचनानुसार दीजिए : १५

(अ) निम्नांकित मुहावरों में से किन्हीं **सात** के अर्थ दीजिए :

(१) आँखों का तारा

(२) ईद का चाँद

(३) चल बसना

(४) नाक कट जाना

(५) तरस खाना

(६) हाथ साफ करना

(७) आँटे दाल का भाव मालुम होना

(८) लोहे के चने चबाना

(९) अक्ल का दुश्मन

(१०) नौ–दो–ग्यारह होना

(ब) निम्नांकित में से किसी **एक** पर टिप्पणी लिखिए ।

(१) पंचवटी की कथा में कवि द्वारा किये गये परिवर्तन ।

(२) गुप्तजी का संक्षिप्त परिचय ।

૩ निम्नांकित में से किन्हीं **तीन** की ससन्दर्भ व्याख्या कीजिए : १५

(१) ''जितने कष्ट कण्टकों में हैं जिनका जीवन सुमन खिला गौरव गन्ध उन्हें उतना ही अत्र तत्र सर्वत्र मिला ।''

(२) ''होता यदि राजत्व मात्र ही लक्ष्य हमारे जीवन का तो क्यों अपने पूर्वज उसको छोड़ मार्ग लेते वन का ?''

(३) ''नर कृत शास्त्रों के सब बन्धन है नारी को ही लेकर अपने लिए सभी सुविधाएँ पहले ही कर बैठे नर ।''

(४) ''मेरे मत में तो विपदाएँ है प्राकृतिक परीक्षाएँ, उनसे वही डरें, कच्ची हो जिनकी शिक्षा–दीक्षाएँ ।''

(५) ''नहीं जानती हाय ! हमारी माताएँ आमोद–प्रमोद, मिली हमें हैं कितनी कोमल, कितनी बड़ी प्रकृति की गोद ।''

४ लक्ष्मण का चरित्र–चित्रण कीजिए । १५

अथवा

४ सीता का चरित्र–चित्रण कीजिए । १५

५ निम्नांकित परिच्छेद का हिन्दी में अनुवाद कीजिए : १०

''મારા સ્વપ્નનું સ્વરાજ એ ગરીબનું સ્વરાજ છે. રાજા અને ધનિક વર્ગ જીવનની જે જરૂરિયાતોનો ઉપયોગ કરે છે તે તમને પણ સુલભ હોવી જોઈએ. પણ એનો અર્થ એવો નથી કે તેઓની માફક તમારે પણ મહેલો હોવા જોઈએ. સુખને માટે તેની જરૂર નથી. તમે કે હું એમાં ભૂલા પડીએ પણ તમને ધનિક ભોગવતો હોય એવી જીવનની બધી સામાન્ય સગવડો મળવી જોઈએ. એ બાબતમાં મને સહેજ પણ શંકા નથી કે જ્યાં સુધી સ્વરાજમાં આ સગવડોની ખાતરી આપવામાં નથી આવતી ત્યાં સુધી પૂર્ણ સ્વરાજ નથી.''

– ગાંધીજી

अथवा

५ निम्नांकित परिच्छेद का गुजराती में अनुवाद कीजिए : १०

''मैं मानता हूँ और मैंने अगनित बार कहा है – कि हिन्दुस्तान उनके इने–गिने शहरों में नहीं बल्कि सात लाख गाँवों में बसता है । किन्तु हम यहाँ इक्कट्ठे हुए हैं वह गाँव के लोग नहीं है बल्कि शहरी लोग है । हम शहरों में रहने वालों ने मान लिया है कि हिन्दुस्तान उनके शहरों में बसता है । और गाँव तो हमारी आवश्यकताएँ पूर्ण करने के लिए बने हैं । हमने कभी इस ओर ध्यान नहीं दिया कि उन गरीब लोगों को आवश्यक अन्न–वस्त्र मिलते हैं या नहीं और उनके पास धूप और बरसात से बचने के लिए झोंपड़ी है या नहीं ।''